Date :

HISTORY (H)

PAPER - III

B. A - II.

B. Polity

(ii) political development.

chol (political development

⇒ चोल का राजनीतिक इतिहास :-

चोल - प्राचीन भारत का एक राजवंश था। दक्षिण भारत में और पास अन्य देशों में तमिल चोल शासकों ने 9 वीं शताब्दी से 13 वीं शताब्दी तक अत्यंत शक्तिशाली हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की।

उन्होंने न सिर्फ एक विशाल साम्राज्य की स्थापना किया

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

बल्कि एक शक्तिशाली नौसेना का भी गठन किया जिसने श्रीलंका पर भी अपना नियंत्रण स्थापित किया तथा साथ ही हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत के समुद्री व्यापार का मार्ग प्रशस्त किया। चोल साम्राज्य को मध्य कालीन दक्षिण भारतीय इतिहास की चरम परिणीत कहा जा सकता है।

→ राजनैतिक इतिहास

चोल शासक दक्षिण भारत में पल्लवों के अधीनस्थ सामंतों के रूप में कार्यरत थे। 850 ई. में विजयालय ने तंजौर पर कब्जा कर लिया। इसी ने चोल राजवंश की स्थापना की थी। उसने परकेसरी की उपाधि धारण की। उसने पल्लव एवं पाड्य शासकों के संघर्ष का लाभ उठाकर अपनी स्थिति

Scanned with CamScanner

Date :

मजबूती कर ली। विजयालय के पुत्र आदित्य प्रथम ने पल्लव शासक को हराकर मार डाला। इसके उत्तराधिकारी परांतक प्रथम (907–953 ई०) ने साम्राज्य विस्तार को और विस्तार किया। तथा 915 ई० में उसने पाण्ड्य की सेना को वेल्लूर के युद्ध में पराजित किया।

राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय की मृत्यु (965 ई०) के उपरांत राष्ट्रकूट साम्राज्य का विघटन होना शुरू हुआ। चोल शक्ति का जीर्णोद्धार 985 ई० में राजराज प्रथम (985–1014 ई०) के अधीन प्रारंभ हुआ। उसने अनेक विजयों के पश्चात विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। 994 ई० से 1002 के मध्य उसने सैनिक अभियान किये तथा उसने चेर, पाण्ड्य

SELCO

Date : _____

चालुक्य तथा कलिंग गंग शासकों को पराजित किया। 1004 ई० से 1012 ई० के मध्य नौसेना अभियान के क्रम में उसने श्रीलंका के उत्तरी क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। उसके नाम मुम्मडी चोलमंडलम रखा। उसने मालदीव पर भी विजय प्राप्त की। इन सभी विजयों की जानकारी तंजौर एवं तिरुवलंगाडु अभिलेख से प्राप्त होती है।

⇒ राजेन्द्र प्रथम :-

⇒ राजराज प्रथम के उत्तराधिकारी एवं उसके पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1014 ई० से 1044 ई०) थे। राजराज प्रथम की विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाते हुए राजेन्द्र प्रथम ने पांड्य और चेर राजवंश को पूर्णतः उन्मूलन करके अपने साम्राज्य में मिला लिया। उसने 1017 ई० में अनुराधापुर

Scanned with CamScanner

Date :

के दक्षिणी भाग को जीत कर इस भाग को पूर्णतः अपने साम्राज्य में मिला लिया। इन सैनिक कार्यवाहियों का उद्देश्य अंशतः यह था कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ होने वाला व्यापार पर अधिकार कर लेना था। कोरोमंडल तट तथा मालाबार तट जो कि व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र था। 1022-23 के बीच उसने बंगाल पर सफल सैनिक अभियान किया और महिपाल को पराजित किया। इस अवसर पर उसने गंगैकोंडचोलपुरम की उपाधि धारण की तथा तंजोर के नजदीक गंगैकुंडचोलपुरम को राजधानी बनाया। राजेन्द्र प्रथम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विजय 1025 ई० में श्री विजय की थी।

Scanned with CamScanner

Date :

⇒ राजधिराज (1004-52)

चोल काल का अगला शासक राजधिराज अनेक विद्रोह और उपद्रवों से परेशान था। उसने अनुराधपुर (श्रीलंका) में हुए विद्रोह का दमन किया। कोप्पम के युद्ध में उसने चालुक्य शासन सोमेश्वर को हरा कर उसकी शक्ति को कमजोर कर दिया। किन्तु इसी युद्ध में इसकी मृत्यु हो गई। इससे पहले अपनी सैनिक सफलताओं के उपलक्ष में अश्वमेध यज्ञ किया और जयगोंडचोल की उपाधि धारण की। राजधिराज का अनुज उत्तराधिकारी उसका भाई राजेन्द्र द्वितीय (1052-63) ने रणभूमि में ही अपना राज्याभिषेक कराया और युद्ध में सफ-

सत्ता प्राप्त की। इसके पश्चात वीर राजेन्द्र (1063-70 ई०) शासक बना। उसने विक्रमादित्य के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया तथा दोनों में मैत्रीपूर्ण संबंध बन गये। वीर राजेन्द्र के उत्तराधिकारी अधिराजेन्द्र को जनता ने उसके राज्यारोहण के पश्चात तुरंत राजगद्दी से हटा दिया।

⇒ कुलोत्तुंग प्रथम (1070) -
लगभग 1070 ई० कुलोत्तुंग प्रथम शासक बना। उसके पिता चालुक्य वंश के शासक (विमलादित्य) था उसकी माँ चोल राजकुमारी थी। अब चोल चालुक्य दोनों एक हो गये। उसने युद्धनीति त्याग कर जनकल्याणकारी कार्य किया। 1077 ई० में उसने चीन के सम्राट के समक्ष अपना दूत

Date :

गोज कर व्यापारिक संबन्धों को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया, इसके पश्चात के उत्तराधिकारी मे विक्रम चोल (1120-35 ई०), कुलोत्तुंग तृतीय (1135-50 ई०), राजराज प्रथम तृतीय (1210-50 ई०) और राजेन्द्र तृतीय (1250-67 ई०) शामिल हैं। राजेन्द्र तृतीय (1250-67 ई०) के की मृत्यु के बाद चोल वंश का इतिहास समाप्त हो गया।

चोल साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण लगातार युद्ध और संघर्ष था जिसने राज्य के आर्थिक और सैनिक संसाधनों का काफी ह्रास हुआ।

परवर्ती चोल शासकों की कमजोरी और बगैरावतो.

Scanned with CamScanner

SELCO FOUNDATION

Date : ________

विशेषकर पांड्य एवं होयसल वंश के उत्कर्ष और उनके द्वारा चोल राजा के क्षेत्र पर बार-बार आक्रमण ने भी साम्राज्य को बहुत ज्यादा कमजोर किया।

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College Tajpur

Scanned with CamScanner